पूर्वोत्तर प्रभा

(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

हिंदी सिनेमा के गीतों में जीवन के विविध रूप

ज्ञानबती कुमारी साह

शोधार्थी, हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक

ईमेल: gyantisha1111@gmail.com

शोध-सारांश: हमारा जीवन तमाम भौतिक घटनाओं से प्रभावित होता आया है। लगभग 110 सालों के सिनेमाई इतिहास ने समाज के विविध पहलुओं को प्रस्तुत करने में अपनी महत्ती भूमिका निभाई है। गीत-संगीत से हमारा गहरा संबंध है और हिंदी सिनेमा के गीतों द्वारा जीवन संबंधी इन्हीं विविधता को दिखाने का प्रयत्न किया गया है। सिनेमा के एक सौ दस सालों के इतिहास में जीवन और गीतों का अंतरसंबंध कैसा रहा है, उसकी अभिव्यक्ति बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत हुई है। भारत एक बहुभाषी देश है। आज भले ही हर प्रान्त में अलग-अलग बोलियाँ बोली जाती हों, परंतु जब हिंदी सिनेमा के गीतों की बात आती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि कोई प्रान्त अलग बोलियों का प्रान्त नहीं अपितु एक ही भाषा-बोली का प्रान्त है। हिंदी सिनेमा जगत ने फिल्मों में गीतों के संयोजन द्वारा जीवनासंबंधी अनेक संदर्भों को उकेरने का सफल प्रयास किया है, जिसमें हम जीवन के हर पहलू को देख सकते हैं।

सूचक शब्द: हिंदी सिनेमा, गीत-संगीत, फिल्म, प्रेम, जीवन, गीतकार, संगीतकार

मूल लेख

अभिव्यक्ति के हर माध्यम की अपनी चरित्रगत विशेषता होती है, जिसके द्वारा हमारे संवेदनात्मक ज्ञान को विकसित होने का अवसर मिलता है। जिस तरह साहित्य-सिनेमा द्वारा लेखक और निर्देशक पात्रों एवं चरित्रों का गठन कर व्यक्ति के मनोभावों को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है, उसी तरह गीतकार एवं संगीतकार गीत-संगीत के माध्यम से व्यक्ति, समाज और देश आदि के मनोभावों को अपने गीतों और लोकगीतों में प्रकट करता है।

गीतों का हमारे जीवन से नाभिनाल का नाता है। कहा जाता है कि मनुष्य की उत्पत्ति के साथ ही गीतों की भी उत्पत्ति हुई है। गीत भावों की रसात्मक एकात्मानुभूति है। भले ही हिंदी सिनेमा में गीतों की शुरुआत 1931 में आई चलचित्र फिल्म आलम-आरा से होती है, परन्तु सदियों से गीत हमारे जीवन का अभिन्न अंग रहा है। हिंदी फिल्मों की सच्ची पहचान तो उसके गीत-संगीत ही रहे हैं, जिसने दुनिया भर में अपनी एक अलग पहचान बनाई। हिंदी सिनेमा के गीत के संदर्भ में शशांक दुबे लिखते हैं कि – "हिंदी सिनेमा की आत्मा गीतों में

ही बसी है। जब दर्शक सिनेमा हॉल से फिल्म देखकर बाहर निकलता है, तब न तो उसे कहानी याद रहती है न संवाद। याद रह जाता है तो फिल्म का गीत-संगीत।" (सिंह, 2016, पृ. 18)

जिस प्रकार साहित्य समाज का दर्पण एवं मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसी प्रकार सिनेमा को हम अपने जीवन और समाज के अंग के रूप में देख सकते हैं। गीत तो हमारे जीवन का अभिन्न अंग रहा ही है साथ ही सिनेमा के सौ वर्षों के इतिहास में ये गीत-संगीत सिनेमा के भी अभिन्न अंग के रूप में उभरकर आते हैं। शुरुआत की कुछेक फिल्मों में भले ही गीतों का संयोजन न हुआ हो, परन्तु गीत और संगीत के बगैर हम हिंदी सिनेमा और हिंदी सिनेमा ही क्यों भारत में बनने वाली तमाम भाषाओं के सिनेमा की कल्पना नहीं कर सकते। बहरहाल हम हिंदी सिनेमा के गीतों में जीवन के विविध रूप की चर्चा कर रहे हैं, जो हमारे सामने कई रूपों में उपलब्ध हैं। जैसे- प्रेम-घृणा, सुख-दुख, संस्कृति, 'व्रत-त्यौहार', 'खान-पान', 'रहन-सहन', विवाह, रस्म आदि।

प्रेम जो हमारे जीवन का एक ऐसा हिस्सा है, जिसके बिना हम मनुष्य जीवन की शायद कोई कल्पना नहीं कर सकते अतः सिनेमा जगत ने उसके (प्रेम) विविध संदर्भों को बड़ी ही सुगमता एवं सहजता से उकेरा है। प्रेम एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति हमारे अंतर्मन में प्रवेश करने की शक्ति रखता है। प्रेम कई प्रकार के होते हैं – माता-पिता का प्रेम, नायक-नायिका का प्रेम, दाम्पत्य जीवन का प्रेम, देश-प्रेम आदि। हिंदी सिनेमा के गीतों में प्रेम के सभी स्वरूपों की झलक दिखाई पड़ती है। उदाहरणार्थ:

"तुझे सूरज कहूँ या चंदा, तुझे दीप कहूँ या तारा
मेरा नाम करेगा रौशन जग में मेरा राज दुलारा।" (फिल्म: तुझे सूरज कहूँ या चन्दा)

इस गीत में एक पिता का अपने पुत्र के प्रति प्रेम को दिखाया गया है, जिससे हम सहज ही जुड़कर भावुक हो जाते हैं। फिल्मों में गीतों का संयोजन कथा-विस्तार के लिए किया जाता है, परन्तु ये संयोजन कैसे हमारे जीवन के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है ये हम खुद नहीं समझ पाते। इसी तरह के कुछेक उदाहरण और भी हैं जो प्रेम के विविध स्वरूपों को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। जैसे-

"कहे तोसे सजना ये तोहरी सजनीया, पग-पग लिए जाऊँ तोहरी बलइयां मैं" (फिल्म: मैंने प्यार किया)

इस उद्धरण में भारतीय स्त्री का वह स्वरूप है, जो अपने पति के प्रति समर्पित है तथा एक पतिव्रता नारी के सारे गुण से भरी हुई है, जो अपने पति के दुख से दुखी है और अपने पति के हर दुख को अपने सर पर उठाने के लिए तत्पर है। आज के सिनेमा के गीतों में इसका स्वरूप कुछ अलग ही दिखाई देता है। जैसे-

"दिल पे पत्थर रख के मुह पे मेक अप कर लिया मेरे सइयाँ जी से आज मैंने ब्रेक अप कर लिया"

(फिल्म: ऐ दिल है मुश्किल)

बहरहाल, हिंदी सिनेमा के गीतों में इस तरह की चीजें कब और कैसे आयी इसका विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है। तथापि प्रेम के अन्य स्वरूपों के संदर्भ में भी गीतों की संरचना हुई है। यथा:

"हमने देखी है उन आँखों की महकती खुशबू, प्यार को प्यार ही रहने दो कोई नाम न दो" (फिल्म: खामोशी)

इन दोनों गीतों में निस्वार्थ प्रेम की झलक नज़र आती है। गीतों के इसी क्रम में देश-प्रेम, नायक-नायिका प्रेम आदि स्वरूप को भी देखा जा सकता है। उदाहरणार्थ: "दोस्तों, साथियों हम चले दे चले अपना दिल अपनी जान ताकि जीता रहे अपना हिन्दुस्तान हम जिए हम मरे इस वतन के लिए इस चमन के लिए ताकि खिलते रहें गुल हमेशा यहाँ" (फिल्म: खामोशी)

यह गीत देश-प्रेम से ओत-प्रोत है, जिसमें अपने देश के लिए कुर्बान होने की प्रेरणा दी जा रही है, तो वहीं नीचे दिए गए उद्धहरण में नायक-नायिका के मान-मनुहार के दर्शन होते हैं –

"अच्छा जी मैं हारी चलो मान जाओ ना
देखी सबकी यारी मेरा दिल जलाओ ना
छोटे से कसूर पे ऐसे हो ख़फा, रूठे तो हजूर थे मेरी क्या ख़ता
देखो दिल न तोड़ो छोड़ो हाथ छोड़ो
छोड़ दिया तो हाथ मलोगे समझे, अजी समझे" (फिल्म: काला पानी)

इसी क्रम में सुख-दु:ख आता है, जो मनुष्य जीवन में सिक्के के दो पहलू की तरह है। जिस प्रकार हम कर्म किए बिना फल की इच्छा नहीं कर सकते उसी तरह बिना सुख-दुख के जीवनानुभव को प्राप्त नहीं किया जा सकता अर्थात् बिना दुख झेले न तो हम सुख की सुखद अनुभूति कर सकते हैं और न ही जीवन जीने की अनुभूति ही प्राप्त कर सकते हैं। अतः जीवन से जुड़े इन महत्त्वपूर्ण पहलुओं को भी सिनेमा के गीतों में देखा जा सकता है। जैसे –

"सजनवा बैरी हो गए हमार
चिट्ठियाँ हो तो हर कोई बाँचै, भाग न बाँचै कोई
……..
सूनी सेज, गोद मोरी सूनी, मरम न जाने कोए / छट पट तड़पे प्रीत बेचारी, ममता आँसू रोए
ना कोई इस पार हमारा, ना कोई उस पार ---- सजनवा...." (फिल्म: तीसरी कसम)

इस गीत के माध्यम से एक स्त्री के हृदयगत स्थिति से परिचित करवाया गया है। इसमें एक भारतीय स्त्री को अपने प्रियतम से बिछड़ने पर एवं उसके कहीं और बस जाने पर किस प्रकार का दुख होता है, उसको दिखाने की चेष्टा की गई है। इसी तरह जीवन के अनेक पक्षों को हिंदी सिनेमा के गीतों में दिखाया गया है।

अनुषा रिज़वी के निर्देशन में बनी फिल्म 'पीपली लाइव' का एक गीत लोक धुनों के धुरी पर रचा गया है, जिसे हिंदी साहित्य जगत के जाने-माने हस्ती स्वानन्द किरकिरे ने लिखा है। इस गीत द्वारा वर्तमान सरकार पर कटाक्ष किया गया था, जो आज के संदर्भ में भी प्रासंगिक है। यथा:

सखी संइया तो खूब ही कमात हैं / महंगाई डायन खाए जात है
हर महीने उछले पेट्रोल / डिजल का उछला है रोल / शक्कर बाई के का बोल
उसमें बासमती धान मारी जात है / महंगाई डायन खाए जात है" (फिल्म: पीपली लाइव)

हिंदी सिनेमा के हर दशक के गीतों में तरह-तरह के पुट देखने को मिलता है। जैसे 40-50 के दशक के गीतों में आध्यात्मिकता का पुट मिलता है, जिसमें देश-प्रेम, निस्वार्थ-प्रेम, मातृ-पितृ-प्रेम को देखा जा सकता है। वैसे ही 50 से लेकर अब तक के गीतों में विविध प्रकार के पुट के दर्शन हमें हिंदी सिनेमा के गीतों में देखने को मिलते हैं।

इन गीतों में प्रेम के कई स्वरूपों को देखा जा सकता है। गीत का जो चलन आलम आरा से शुरू हुआ वह आज एक परंपरा का रूप ले चुकी है। हम हिंदी सिनेमा जगत में वजीर मोहम्मद खान को प्रथम गीतकार एवं संगीतकार के रूप में फ़िरोज शाह मिस्त्री को देख सकते हैं। आज हमारे समक्ष ऐसे अनेक गीतकार एवं संगीतकार है, जो हिंदी सिनेमा के लिए गीत और संगीत रच रहें हैं और वो काफ़ी सराहनीय एवं पसंदीदा भी हैं, परन्तु कवि प्रदीप, शैलेन्द्र, भारत व्यास, नीरज, योगेश, पंडित नरेंद्र शर्मा, कल्याणजी-आनंदजी, शंकर-जयकिशन आदि कई ऐसे गीतकार एवं संगीतकार के नाम है, जो हिंदी सिनेमा में गीतों के लिए अविस्मरणीय हैं। कवि और गीतकार शैलेन्द्र ने जीवन के हर पक्ष को लेकर गीतों की रचना की है। जैसे- सजन रे झूठ मत बोलो, मेरा जूता है जापानी, किसी के मुस्कुराहटों पे हो निसार, आवारा हूँ, सब कुछ सीखा हमने न सीखी होशियारी आदि।

हिंदी सिनेमा का गीत वैविध्यपूर्ण रहा है, जिसमें जीवन के हर तरह के पहलू का दिग्दर्शन होता है, जिसमें तीज-त्यौहार से लेकर व्रत-उपवास, पर्व-उत्सव पर गीत लिखे एवं गाए गए हैं। 'गंगा जमुना सरस्वती' फिल्म में वट सावित्री के व्रत की महत्ता को व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है। वस्तुतः हिंदी सिनेमा के गीतों में जीवन के हर उन पक्षों से रूबरू करवाने का प्रयास है, जिन पक्षों और पहलुओं से हमारा वास्तविक संबंध है। जैसे होली एक ऐसा उत्सव है जो सम्पूर्ण भारत वर्ष में मनाया जाता है पर विशेष रूप में यह यू. पी. और बिहार का उत्सव है, जिसे इन क्षेत्रों में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है तथापि ये क्षेत्र विशेष पर्व-उत्सव जब हिंदी सिनेमा जगत से अछूता नहीं रह पाया तो और विषय के अछूते रहने की तो बात ही अलग है।

हिंदी सिनेमा के गीतों में विविधता है, जिसमें जीवन के हर पहलू को बारीकी से देखने और दिखाने का प्रयास निहित है और इन प्रयासों में विभिन्न क्षेत्रों से आये गीतकार एवं संगीतकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान है, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र के लोक संगीतों को हिंदी सिनेमा के गीतों में भुनाया। पर इसमें भी सबसे ज्यादा लोकप्रियता पंजाब, उत्तर भारत और गुजरात के लोकगीतों को प्राप्त हुई।

इस तरह देखा जाए तो हिंदी सिनेमा का गीत वैविध्यपूर्ण रहा है, जिसमें जीवन के विविध पक्षों को दिखाया गया है, जो हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसके बिना हमारा जीवन अधूरा है। उन सभी पक्षों को इन गीतों-संगीतों के माध्यम से उभारने का प्रयास गीतकारों एवं संगीतकारों ने किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सिंह, महेश.(संपा.).(जुलाई-सितंबर -2016).*परिवर्तन*. पांडिचेरी.पांडिचेरी विश्वविद्यालय.

तुझे सूरज कहूँ या चंदा | Manna Dey Old Hindi Songs : Ek Phool Do Mali (1969) Kids Song | Filmi Gaane - YouTube

Kahe Toh Se Sajna - Maine Pyar Kiya - Salman Khan, Bhagyashree - Old Hindi Romantic Song - YouTube

The Breakup Song - Ae Dil Hai Mushkil | Latest Official Song 2016 | Pritam | Arijit I Badshah - YouTube

हमने देखी है उन आँखों की महकती ख़ुशबू HD - ख़ामोशी -वहीदा रहमान - लता मंगेशकर - Old Is Gold - YouTube